

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी

प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

आतंकवाद के खिलाफ कठोर कार्रवाई जरूरी

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में मजदूरों पर हुआ नृशंस आतंकी हमला केवल दो निर्दोष भारतीय नागरिकों की हत्या भर नहीं है, बल्कि यह भारत की आंतरिक शांति, सामाजिक सौहार्द और राष्ट्रीय सुरक्षा को चुनौती देने का एक सुनियोजित प्रयास है. जिस प्रकार आतंकियों ने पहले नाम और धर्म पूछा, फिर पानी मांगा और उसके बाद गोलियां बरसाईं, उससे स्पष्ट है कि उनका उद्देश्य केवल हत्या करना नहीं, बल्कि समाज में भय, अविश्वास और सांप्रदायिक तनाव फैलाना था. यह हमला पहलगाम जैसी आतंकी वारदात की पुनरावृत्ति है, जो बताता है कि आतंकवाद का चेहरा आज भी उतना ही क्रूर और अमानवीय है.

प्रारंभिक जांच में जिस प्रकार लश्कर-ए-तेयबा से जुड़े आतंकी लतीफ बट का नाम सामने आया है, उससे यह भी स्पष्ट होता है कि सीमा पार बैठे आतंकी आकाओं के इशारे पर यह साजिश रची गई. ऐसे हमले किसी एक व्यक्ति या संगठन की सनक नहीं होते, बल्कि

पाकिस्तान की धरती और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में सक्रिय आतंकी ढांचे की सोची-समझी रणनीति का हिस्सा होते हैं. भारत लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इस सब को उजागर करता आया है कि आतंकवाद को संरक्षण और संसाधन उपलब्ध कराने वाले तंत्र को समाप्त किए बिना स्थायी शांति संभव नहीं है.

इस हमले का समय भी कई सवाल खड़े करता है. पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में पिछले कुछ समय से जनता का असंतोष खुलकर सामने आ रहा है. वहां आर्थिक बढ़हाली, प्रशासनिक विफलता और राजनीतिक दमन के विरुद्ध विरोध-प्रदर्शन तेज हुए हैं. ऐसे माहौल में सीमा पार से भारत में आतंकी घटनाओं को अंजाम देकर पाकिस्तान की सत्ता और वहां सक्रिय आतंकी संगठन दुनिया का ध्यान पीओके के संकट से हटाने का प्रयास कर सकते हैं. हालांकि

किसी एक घटना के पीछे अंतिम निष्कर्ष जांच के बाद ही निकाले जा सकते हैं, लेकिन इतना स्पष्ट है कि आतंकवाद का इस्तेमाल अवसर राजनीतिक और रणनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता रहा है.

ऐसे समय में भारत को केवल निंदा तक सीमित नहीं रहना चाहिए. सुरक्षा एजेंसियों को आतंकियों के पूरे नेटवर्क, उनके स्थानीय सहयोगियों और वित्तीय स्रोतों पर निगरानी प्रहार करना होगा. सीमा पर निगरानी और घुसपैठ रोकने के उपायों को और अधिक सशक्त बनाने के साथ-साथ खुफिया तंत्र के समन्वय को भी मजबूत करना होगा. आतंकवाद के प्रति किसी भी स्तर पर नरमी या शिथिलता का संदेश नहीं जाना चाहिए. जो भी व्यक्ति आतंकियों की शरण, सहायता या सूचना उपलब्ध कराता है, उसके विरुद्ध भी कठोरतम कानूनी कार्रवाई

सुनिश्चित होनी चाहिए. साथ ही, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत को पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के मुद्दे को और अधिक प्रभावी ढंग से उठाना चाहिए. दुनिया को यह समझना होगा कि आतंकवाद किसी एक देश की नहीं, बल्कि पूरी मानवता की समस्या है. यदि आतंकवाद के संरक्षकों पर समय रहते दबाव नहीं बनाया गया, तो उसका दुष्परिणाम वैश्विक शांति को भी भुगतना पड़ेगा.

निर्दोष नागरिकों का रक्त किसी भी सभ्य समाज के लिए अस्वीकार्य है. कुलगाम की यह घटना यह याद दिलाती है कि आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है. सरकार को ऐसी हर साजिश का जवाब केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कठोर, त्वरित और निर्णायक कार्रवाई से देना होगा, ताकि आतंक के आकाओं और उनके संरक्षकों दोनों को यह संदेश मिल जाए कि भारत अपने नागरिकों की सुरक्षा के प्रश्न पर किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेगा.

जेन जी राजनीति



अनिल कुमार जायसवाल

ये समय है भारत की राजनीति में उभरती अवसर की राजनीति को समझने का चुनावों को क्या चाहिए? इस सवाल पर आज लगभग हर राजनीतिक दल का जवाब होगा, शिक्षा, रोजगार, और बेहतर भविष्य. लेकिन 20 वर्षीय छात्र से यही सवाल पूछा जाए तो उसका जवाब शायद अलग होगा, यह कि इतना अवसर मिले ताकि मैं अपना भविष्य अपनी मेहनत से बना सकूँ. यही वाक्य भारत की आगामी राजनीति को समझने की एक मजबूत कुंजी हो सकती है.

इन लेख में जेन जी का मतलब सिर्फ एक पीढ़ी नहीं, बल्कि 18 से 30 वर्ष आयु का राजनीतिक युवा है, जो पहली बार या शुरुआत के चुनाव में मतदान कर रहा है. भारत निर्वाचन आयोग के अनुसार 2024 लोकसभा चुनाव वे लगभग 1.8 करो? नए मतदाता जुड़े हैं. आगे की भारतीय राजनीति को समझने के लिए इस राजनीतिक युवा को समझना जरूरी है. भारतीय राजनीति में आज लगभग सभी दल युवाओं तक पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं. भाजपा राष्ट्रवाद, विकासि भारत, मजबूत नेतृत्व, डिजिटल इंडिया एवं स्टार्टअप की बात करती है. पिछले एक दशक में कम इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया,

आज इन्हें जरूरत है एक करियर अनुभव अवसर की, जिससे प्रत्येक छात्र वर्ष में कम से कम एक बार कुछ दिन अपनी रुचि के अनुसार समय बिता सके. यदि किसी की रुचि फोटोग्राफी, संगीत, खेल, रोबोटिक्स, डिजाइन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कृषि नवाचार या अन्य क्षेत्र में है तो वह उस क्षेत्र के उत्कृष्ट संस्थान एवं विशेषज्ञ के साथ सहकर करीब से देख एवं समझ सके. ये कोई नया विचार नहीं है, आईसीडी ने करियर गाइडेंस रिपोर्ट 2021 में माना है की छात्रों को प्रारंभिक अवस्था में ही वास्तविक कार्यशाला और पेशेवरों से जोड़ने से उनकी करियर के निर्णय ज्यादा सटीक होते है. सरकार, जिस तरह छात्रों को छात्रवृत्ति, शिक्षा ऋण, कौशल प्रशिक्षण एवं अन्य शैक्षणिक सहायता प्रदान करती है उसी तरह करियर अनुभव का भी अवसर उपलब्ध करा सकती है. आज जिस तरह जेन जी की अवसर की माँग बढ़ रही है आने वाले वर्षों में भारतीय राजनीति की लड़ाई विचारों कि नहीं, अवसरों की हो सकती है. जो राजनीतिक दल युवाओं को बेहतर अवसर देगा वही उनका विश्वास जीतेगा. शायद उस दिन भारतीय राजनीति का चुनावी मुद्दा सिर्फ विकास नहीं अवसर होगा.

डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया और पीएम मुद्रा योजना जैसे पहल इस दिशा का हिस्सा रहे हैं. तो वही कांग्रेस संविधान, आर्थिक समानता, सामाजिक न्याय, शिक्षा और रोजगार पर ज्यादा जोर देती है. हाल ही चुनावों में संविधान, सामाजिक सुरक्षा आर रोजगार उनके प्रमुख मुद्दे रहे हैं. लेकिन आज का राजनीतिक युवा इनसे सवाल पूछता है कि उसे कितने अवसर मिलेंगे? उसके वास्तविक जीवन में क्या बदलाव आएगा? लोकनीति-सीएसडीएस के चुनावी अध्ययनों मे भी युवाओं की आर्थिक सुरक्षा मुख्य प्राथमिकताओ में रहा है.

पिछले दशकों में, अधिकारों की राजनीति फिर विकास की राजनीति, अब भारत की राजनीति में सबसे बड़ा परिवर्तन हो रहा है जिसे अवसर की राजनीति कहा जा सकता है.

इसका मतलब विकास का विरोध नहीं, बल्कि विकास के साथ अवसरों की अपेक्षा है. इस परिवर्तन को समझने के लिए किसी कठिन राजनीतिक सिद्धांत की जरूरत नहीं, बल्कि एक किसान के उदाहरण से समझा जा सकता है. जिस तरह किसान सरकार से पूरी खेती का जिम्मा उठाने की माँग नहीं करता है, वह चाहता है कि समय पर खाद, अच्छी बीज, सिंचाई की सुविधा एवं फसल का उचित मूल्य मिले, बाकी अपनी मेहनत से अपनी किस्मत लिखता है. ठीक इसी तरह राजनीतिक युवा भी, सरकार से सफलता नहीं माँगता, बल्कि माँगता है तो निष्पक्ष अवसर, पारदर्शी व्यवस्था, अच्छी शिक्षा और अपनी प्रतिभा साबित करने का मंच, बाकी अपनी मेहनत से सफलता खुद हासिल करना चाहता है.

यही कारण है कि जेन जी की राजनीति अलग है, वह आज सरकार के अच्छे कामों का समर्थन करती है तो, कल उसी सरकार के गलत नीतियों का विरोध करने में पीछे नहीं हटती. इसे किसी राजनीतिक अस्थिरता का नहीं बल्कि प्रदर्शन आधारित लोकतंत्र का संकेत कहा जा सकता है. हलाँकि भारत की राजनीति में जहाँ जाति, स्थानीय नेतृत्व और क्षेत्रीय मुद्दे अभी भी प्रभावशाली है लेकिन लोकनीति-सीएसडीएस के अध्ययनों से संकेत मिलते है की शासन का प्रदर्शन पहले से ज्यादा महत्वपूर्ण हो रहा है. राजनीतिक युवा केवल वादों पर विश्वास नहीं करती बल्कि पूछती है योजना का रोडमैप, समय-सीमा, वित्तीय स्पष्टता, जिम्मेदारी एवं जवाबदेही. हाल ही में हिंदी भाषी क्षेत्रों (मुख्यतः मध्य प्रदेश एवं आस-पास के क्षेत्रों) में युवाओं और विद्यार्थियों से बात-चीत से दो बातें लगातार सामने आईं. पहला निष्कर्ष है, कि कोरोना महामारी के बाद छोटे कस्बों एवं गांवों में लाइब्रेरी का चलन तेजी से बढ़ा है. लगभग हर क्षेत्र में एक सार्वजनिक लाइब्रेरी की मांग बढ़ी है. ये माँग सिर्फ एक भवन कि नहीं बल्कि उस वातावरण की है जहाँ भविष्य के सपनों को तैयार करने का अवसर मिल सके. राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी लाइब्रेरी और सेल्फ लर्निंग की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण हिस्सा मानती है.

(लेखक आईआईटी पटना ग्रेजुएट, चुनाव शोधकर्ता और रणनीतिकार)

पर्यावरण की अनदेखी महंगी पड़ेगी

देश में विकास की रफ्तार तेज करने की होड़ के बीच पर्यावरण संरक्षण का सवाल अवसर पीछे छूट जाता है. यही कारण है कि विकास परियोजनाओं को मंजूरी देने की प्रक्रिया में पर्यावरणीय विंताओं को कई बार अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता. परिणाम यह होता है कि जब किसी परियोजना के दुष्परभाव सामने आते हैं, तब नुकसान की भरपाई के उपाय तलाशे जाते हैं, जबकि तब तक काफी देर हो चुकी होती है. हाल में सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रवृत्ति पर महत्वपूर्ण दिपष्णी करते हुए स्पष्ट किया है कि किसी परियोजना के शुरू हो जाने या पूरा होने के बाद पर्यावरणीय मंजूरी देना उचित व्यवस्था नहीं मानी जा सकती. अदालत ने 2021 के उस सरकारी आदेश को निरस्त कर दिया, जिसके तहत परियोजनाओं को बाद में भी पर्यावरणीय मंजूरी देने का प्रावधान किया गया था. अदालत का मानना है कि ऐसी व्यवस्था पर्यावरण संरक्षण की मूल भावना के विपरीत है और इससे पर्यावरणीय नियमों का पालन कमजोर पड़ता है. निरसंदेह, विकास किसी भी देश की आवश्यकता है, लेकिन विकास और पर्यावरण को एक-दूसरे का विरोधी नहीं माना जा सकता. यदि विकास की कीमत प्राकृतिक संसाधनों, स्थानीय परिस्थितिकी



बल्कि उन्हें पूरी गंभीरता से लागू किया जाए.

और लोगों के जीवन पर पड़ने वाले दुष्परभाव के रूप में चुकाती पड़े तोउसकी उपयोगिता पर सवाल उठाना स्वाभाविक है. यही कारण है कि पर्यावरणीय मंजूरी की प्रक्रिया का उद्देश्य केवल औपचारिकता निभाना नहीं, बल्कि संभावित नुकसान का पहले से आकलन करना है. यह भी ध्यान रखना होगा कि पर्यावरण को हुई क्षति की भरपाई हमेशा संभव नहीं होती. जंगलों का विनाश, जैव विविधता का और स्थानीय पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभाव कई बार स्थायी हो जाते हैं. ऐसे में परियोजनाओं को पहले मंजूरी और बाद में समीक्षा की व्यवस्था पर्यावरण संरक्षण की भावना को कमजोर करती है.

- कैसरी नंदन

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्पेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12339 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5
6			7	8
			10	
11	12			13
15			16	17
			18	
19	20	21		22
23				24

बाएं से दाएं

1. गांधीजी की दांडी-यात्रा यहीं से प्रारंभहुई थी 6. पति की बहन 7. वह जो किसी सभा का सदस्य हो 10. शाप देना, कोसना 11. जल में चलने वाला यान या सवारी, जहाज, नाव 13. शरीर, देह 15. किसी वस्तु के प्राग होने पर प्रमाण स्वरूप लिखा हुआ पत्र 16. परिश्रम 18. धीमा शब्द, उड़ती खबर 19. उम्मीद 21. पूर्णिमा की रात, चंद्रमा 22. तिरिंहति, लोप, ध्वस्त 23. संबंध, वास्ता 24. रंगशाला में घटनाओं का प्रदर्शन

ऊपर से नीचे

1. वह पंथर जिस पर औजारों की धार तेज की जाती है 2. एक पौधा जिसकी

दांत (सं.) 4. जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई संबंध न हो, गिनती या क्रम में तीन के स्थान पर पड़ने वाला 5. पत्तियां तुलसी के समान होती हैं 3. दांत, खोह, गुफा 8. वाष्प 9. अनादिकाल, बहुत दिनों से चली आई परंपरा, बहुत दिनों से चला हुआ 10. एक पौधा जिसके रेशे से रस्सियां आदि बनाई जाती हैं, जूट 11. जलने वाला, ईर्ष्या करने वाला 12. स्मरण करने की क्रिया 14. जिसका सिर झुका हुआ हो 16. स्वर्ग की एक अवस्था जो शकुंतला की माता थी 17. अधिकार 18. भरने का भाव या काम, भरना 20. एक प्रकार की ऊनी चादर, दुशाला 22. शर्त, बंध

Solution 12338

अ	स	म	न	त		ल	ज
म	द	न	प	र	वा	ना	
र				अ	रु	धा	
त्व	रि	त	व	ता	र		
	या	स	रो	का	र		
पा	य	रु	ध	म	क	ना	
ख	त	र	ना	क		दा	
र	ल	व	र	ज	नी		

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में पारिवारिक विवाद तथा मतभेदों में वृद्धि होगी. भावुकता व जल्दबाजी में लिये गये निर्णय हितकर रहेगा. स्वास्थ्य गड़गड़ रहेगा. वर्ष केमध्य में शुभ सूचना प्राप्त होगी. अध्ययन में रुचि एवं सहयोग बना रहेगा. वर्ष के अन्त में मांगलिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी.

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक स्थिति का सामना करना

मेघ- बुजुर्गों के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता हो सकती है. फैसला लेने में स्वयं को अक्षम पायेंगे. दूर दराज की यात्रा का योग है.

वृषभ- बुजुर्गों के आने से प्रसन्नता रहेगी. वृषभ- निजी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करें, सफलता मिलेगी. भूमि मकानादि कार्य में व्यस्त रहेंगे. सम्मान मिलेगा. मांगलिक कार्यों में समय देना होगा.

मिथुन- उलझी बात सुलझाने से आप राहत महसूस करेंगे. कार्यक्षेत्र की योजनाएं अटकगी अध्ययन अध्यापन में मन लगेगा. सुख साहस पराक्रम बढ़ेगा.

कर्क- स्वास्थ्य में चल रहा उतार परेशान कर सकता है. दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा. व्यापार व्यवसाय की प्रगति होगी. धार्मिक कार्यों में लगन रहेगी.

सिंह- प्रियजनों के साथ समय बिताने में खुशी होगी. भाग्योदय के अवसर मिलने से उत्साह बना रहेगा. विरोधियों से कड़े मुकाबले की संभावना है.

कन्या- आप कार्य के बोझ को कम करने की कोशिश करेंगे. कर्ज से छुटकारा पायेंगे. आवेश में सफलता रहेगी. आप कार्य न करें, जो आपके हित में न हो.

तुला- अध्ययन व लेखन से लोगों का बड़ी सफलता मिल सकती है. भाग्योन्नति के प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी. सामाजिक कार्य पूजा पाठ में मन लगेगा.

वृश्चिक- आप लोगों के साथ संबंध बढ़ाने का प्रयास करेंगे. कार्यक्षेत्र में बचस्व बढ़ेगा. शत्रु पर विजय प्राप्त होगी. मांगलिक कार्यों में खर्च होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का एकांतप्रिय लेखन और अध्ययन के क्षेत्र में रुचि रखेगा. नौकरी में उच्च पद पर पदस्थ होगा. माता का विशेष प्रेमी होगी. जन्म स्थान के निकट ही अपना भाग्योदय करेगा.

धनु- अपने गलत व भ्रामक विचारों को छोड़े, सफलता मिलेगी. शीघ्रता में कोई भी फैसला न लें. वाहन संबंधी बिज्जों के कार्यों में उलझन हो सकती है.

मकर- जोखिम के कार्यों से दूर रहें. आपको परेशानी बढ़ सकती है. परिश्रम तथा दौड़धूप की अधिकता रहेगी. अनपेक्षित वृषभनुक्तों के आने से खर्च में वृद्धि होगी. कृष्ण- व्यर्थ विवादों में उलझने की बजाय कार्यों पर ध्यान दें. साझेदारी का लाभ होगा. साहसपूर्ण कार्याकाज बनने का योग है.

मीन- युवा उच्च अध्ययन अथवा प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे. आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा. पूज्य व्यक्ति को सलाह उपयोगी रहेगी.



विपक्ष नहीं है इसलिए कोई भी फैसला निर्विवाद और निर्विरोध लिया जाता है और तत्काल लागू कर दिया जाता है. वहां कोई विल्ल-पों नहीं होती. अपने यहां विपक्ष सरकार पर पूंजीपतियों से सांठगांठ का आरोप लगाता है, पेपर लीक, चंदा चोरी, महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार के मुद्दे उठाकर हल्ला-गुल्ला 10 करता है. सत्तारूढ़ नेता को भगवान मानकर सम्मान नहीं करता. इस विपक्ष में संघ की शाखा का

मालवा - निमाड़ की डायरी



चिटनिस-दादू के मंत्री बनने की आस



संजय व्यास

दत्तिया उपचुनाव से फुरस्त के बाद मध्यप्रदेश मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर एक बार फिर चर्चाएं जोरो पर हैं. बुहानपुर और नेपानगर विधायक ने अपना रुख लॉबींग की ओर कर् लिया है. बुरहानपुर विधायक,

प्रदेश भाजपा प्रवक्ता, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, पूर्व कैबिनेट मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस को दत्तिया चुनाव में प्रचार की महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करने से उनके पुनः मंत्री मंडल में शामिल होने की संभावनाएं बढ़ गई हैं. चिटनिस ने 2003 से 2018 तक विधान सभा जीतकर यहां हैट्रिक लगाई थी और हर बार मंत्री मंडल में जगह बनाई. 2018 के चुनाव में उन्हें निर्दलीय सुरेंद्र सिंह शेरा के सामने मात मिली थी.

2023 में चिटनिस ने पुनः विधान सभा में वापसी की, लेकिन मोहन यादव के प्रारंभिक मंत्री मंडल में आशा के बावजूद स्थान नहीं मिला. अब मंत्री मंडल विस्तार की चर्चाओं के बीच फिर क्षेत्रवासियों को उनके मंत्री बनने की आस बलबती हुई है. वहीं नेपानगर विधायक मंजू दादू का भी भोपाल और दिल्ली दौरा चर्चाओं में है. दूसरी बार विधायक बर्नी मंजू के पास अपने पिता राजेंद्र दादू के पार्टी में योगदान का सहारा है और अनुसूचित वर्ग से आने के कारण व दूसरी बार विधायक चुने जाने को

अपनी जमीन तैयार कर रहे गुर्जर

किसान नेता मंदसौर कांग्रेस जिलाध्यक्ष महेंद्र सिंह गुर्जर विधान सभा चुनाव के लिए अपनी जमीन तैयार करने की मशक्कत कर रहे हैं. वे 2 बार कांग्रेस से विधान सभा चुनाव लड़ चुके हैं, पर सफलता नहीं मिली. इस बार वे अभी से मेहनत कर रहे हैं. जिले में मतदाताओं का रुख कांग्रेस की ओर मोड़ने के लिए उनके सामने 2027 के निकाय-पंचायत चुनाव हैं. जिले में बृथ एवं पंचायत स्तर तक संगठन का शत-प्रतिशत गठन पूर्ण होने के बाद अब गुर्जर का लक्ष्य संगठन के विस्तार के साथ-साथ एकता, समन्वय, अनुशासन और सक्रियता बढ़ाना है. इसी दिशा में उनका बैठकों का दौर चल रहा है. जहां जा रहे हैं वे कार्यकर्ताओं से आगामी नगरीय निकाय एवं पंचायत चुनावों की तैयारियों में अभी से जुटने का आह्वान करते नजर आ जाते हैं. वे विधान सभा चुनाव से पहले पंचायत चुनाव के जरिए कांग्रेस को एकजुटता के साथ मजबूत स्थिति में लाने का ध्येय लेकर आगे बढ़ रहे हैं.



अनुशासन और संस्कार नहीं हैं. विपक्ष के कुछ नेता अपने भड़काऊ भाषणों से सत्तापक्ष के कान में पिघला हुआ सीसा डाल देते हैं. आखिर यह कब तक चलेगा ?

हमने कहा, 'इस समस्या से निपटने के प्रयास हो रहे हैं? चुनाव आयोग, एसआईआर की भरपूर कोशिशों से ऐसे लाखों मतदाताओं का सफाया हो रहा है, जो बीजेपी या एनडीए को वोट नहीं देते. सीजेआई ने भी कुछ युवा वकीलों व बेरोजगार युवाओं को 'कॉकरोच' कह दिया था. उनकी इस कमेंट का असर यह हुआ कि कॉकरोच जनता पार्टी बन गई. इधर बीजेपी है तो उधर सीजेपी जिसने जंतरमंतर पर बड़ा युवा आंदोलन कर डाला. ऐसे में शांति कैसे स्थापित होगी ?

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, शोर हो तो भी क्या, सरकार का काम नहीं रुकता. विपक्ष के बहिर्गमन के बाद वह कोई भी बिल निर्विरोध पारित करा लेती है. इतना जरूर है कि दो-तिहाई बहुमत नहीं होने से परिसीमन बिल पास कराना सरकार के लिए टेढ़ी खीर है.'

SUDOKU 7471

	9			4			7
					7	9	
8							
4	5	8					
3							2
					9	7	6
							4
2		3	5				8

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5

नवभारत सू-दीर्घ 7470